दो दिवसीय शिक्षक विकास कार्यक्रम (4–5 अगस्त, 2018)

"एक अच्छा शिक्षक उपदेश से नहीं बल्कि अपने ज्ञान, व्यवहार और व्यक्तित्व से अपने विद्यार्थियों के जीवन–मार्ग को प्रशस्त व निर्देशित करता है"– ये विचार थे अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ में आयोजित दो दिवसीय (4–5 अगस्त, 2018) "शिक्षक विकास कार्यक्रम" के अन्तर्गत उपस्थित महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. कृष्णकान्त गुप्ता के। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में शिक्षकों को संबोधित करते हुए बताया कि अध्यापक को जीवन पर्यंत स्वयं भी सीखते रहना चाहिए तभी उसका अध्यापन प्रभावशाली हो सकता है। इस कार्यक्रम में चार तकनीकी सत्रों में इंदिरा गाँधी ओपन विश्व विद्यालय, नई दिल्ली के डॉ. आर. सत्यनारायण, विषय विशेषज्ञ डॉ. एस. के. चक्रवर्ती, डी.ए.वी. महाविद्यालय फरीदाबाद से डॉ. रितु अरोड़ा और दिल्ली विश्वविद्यालय से उप–पुस्तकालयाध्यक्ष श्री राजेश सिंह आमंत्रित वक्ता के रूप में उपस्थित थे। डॉ. चक्रवर्ती को अध्यापन का सुदीर्घ कालीन अनुभव है, उन्होंने अपने इसी अनुभव के आधार पर शिक्षकों को सफल अध्यापन के गुर बताए। उन्होंने बताया कि शिक्षक को अपने व्यवसाय का सम्मान करना चाहिए, तभी विद्यार्थियों के मन में भी अपने शिक्षक के प्रति आदर का भाव जगेगा। डॉ. रितु अरोड़ा ने बताया कि कैसे एक शिक्षक एक अच्छा पथ–प्रदर्शक बन सकता है। अपने व्यक्तित्व के सकारात्मक उदाहरणों से वह विद्यार्थियों के लिए आदर्श सिद्ध हो सकता है। श्री राजेश सिंह ने बताया कि आज इंटरनेट के युग में शिक्षक कैसे अपने ज्ञान को अपडेट करके विद्यार्थियों को नई से नई उपयोगी जानकारी दे सकता है। इस कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के एसोसिएट प्रो. मनोज शुक्ला द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। इस आयोजन में 125 शिक्षक उपस्थित रहकर लाभान्वित हुए।